श्री सत्यनारायण भगवानकी आरती

जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।
सत्यनारायण स्वामी,सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ॥ जय लक्ष्मी रमणा..
रतन जडित सिंहासन अद्भुत छवि छाजै ।
नारद करत नीरजन घंटा धुनि बाजे ॥ जय लक्ष्मी रमणा..
प्रकट भये कलिकारण द्विज को दरश दियो ।
बूढो ब्राह्मण बनि के कंचन महल कियो ॥जय लक्ष्मी रमणा..
दुर्बल भील कठोर जिन पर कृपाकरी।
चन्द्रचूड एक राजा जिनकी विपति हरी॥जय लक्ष्मी रमणा..
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्दा तजि दीनी ।
सो फल भोग्यो प्रभु जी फिर अस्तुति कीनी ॥जय लक्ष्मी रमणा..
भाव भक्ति के कारण छिन छिन रुप धरयो ।
श्रद्दा धारण कीनी तिनको काज सरयो ॥जय लक्ष्मी रमणा..
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
मन वांछित फल दीन्हो दीन दयाल हरी ॥जय लक्ष्मी रमणा..
चढत प्रसाद सवायो कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजित सत्यदेवा ॥जय लक्ष्मी रमणा..
श्रि सत्यनारायण्जी की आरती जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख संपति घर आवै ॥जय लक्ष्मी रमणा..

Pd. Raghuchandra Bhat
www.puja123.com